राजस्थान पत्रिका 24/1/2017

पशुपालकों के संकट का निकाला तोड़...

'सूखे' को मात देगा सूखा चारा

अविकानगर में अनुसंधान से तैयार किया

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

टोंक. रेगिस्तानी इलाके वाले राजस्थान में कई बार पर्याप्त बरसात नहीं हो पाती। कई बार बाढ़ जैसे भी हालात हो जाते हैं। ऐसे में पशुओं के चारे पर संकट गहरा जाता है।

इस संकट से मुक्ति पाने के लिए मालपुरा स्थित केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर ने ऐसे चारे का इजाद किया है, जो हर मौसम में पशुओं के खिलाया जा सकता है। इसके भण्डारण व परिवहन पर भी अधिक खर्च नहीं करना पड़ेगा। ये चारा आसानी से किसानों को उपलब्ध हो जाएगा। इसके लिए संस्थान ने चारे की ईंट तैयार की है। ये सभी पोषण तत्वों से भरपूर है, जो पशुओं के लिए जरूरी है।

यूं किया तैयार

केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर के वैज्ञानिकों ने पाया कि सूखे व बाढ़ के दौरान किसान दुधारू पशु गाय व भैंस के लिए तो किसी प्रकार से चारे की व्यवस्था कर लेते हैं, लेकिन भेड़ व बकरी के चारे की व्यवस्था नहीं कर पाता।

नतीजतन उन्हें बेचने में ही भलाई समझता है। ऐसे में सूखे व अधिक बरसात के दिनों के लिए संस्थान ने ऊर्जा, प्रोटीन, विटामिन तथा लवण से भरपूर चारे की खोज की है। ये चारा उन्होंने ऊंट कटेला व नागफनी को सुखाकर तैयार किया है।

इसका कारण है कि किसान इस चारे को काम में नहीं लेता है। ऐसे में ये खेतों में ही लगा रह जाता है। संस्थान के वैज्ञानिकों ने इन दोनों तरह के चारे को एकत्र किया और उसमें सोयाबीन समेत अन्य तत्व डालकर इस चारे को ईंट के रूप में तैयार किया है। इसकी सबसे बड़ी खास बात ये है कि इसमें भरपूर पोषण तो है ही साथ ही कम जगह में भण्डारण भी किया जा सकता है।

फेंके जाने वाले चारे को बनाया उपयोगी

देश में करीब 512 मिलीयन पशु हैं। इतने पशुओं के लिए चारा उत्पादन बड़ा संकट है। हालांकि खेतों में कई प्रकार का चारा होता है, लेकिन उसे पशु नहीं खाते। ऐसे में किसान फसलों के साथ ऐसे चारे का उत्पादन करते हैं, जो पशुओं को खिलाया जा सके। इसके अलावा अन्य चारे को किसान या तो जला देता है या फेंक देता है। संस्थान ने उस फेंके जाने वाले चारे से ही पशु आहार तैयार किया है। रेगिस्तानी प्रदेश राजस्थान में बड़ी तादाद में केक्टस (नागफनी) व ऊंट कटेला नामक चारा होता है। इस चारे में कांटे होने से कोई भी पशु इसे नहीं खाता है। जबकि प्रदेश में कई बार सूखा व बाढ़ जैसे हालात हो जाते हैं। ऐसे में किसानों के सामने सबसे बड़ा संकट चारे का होता है। इसके नहीं होने पर किसान या तो पशुओं को खुला छोड़ देता है या फिर कम दामों में बेच देता है। कुछ लोग पशुओं के लिए महंगा चारा खरीदने को मजबूर होते हैं। ऐसे में उसे आर्थिक नुकसान होता है।

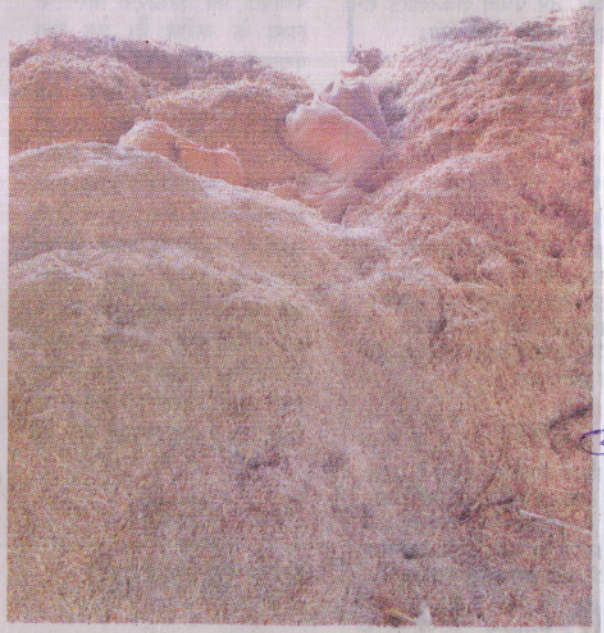

टोंक के केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में पशुओं के लिए आहार के लिए तैयार करने के लिए आया चारा।

25/1/2017

पशुपालक होते थे परेशान

सूखे व बाढ़ के दिनों में पशुपालक सर्वाधिक परेशान चारे को लेकर रहते हैं। चारा गीला होने पर पशु उसे नहीं खाते। सूखा पड़ने पर चारा खरीदना पशुपालकों के लिए मुश्किल है। ऐसे में संस्थान की ओर से तैयार किया चारा पशुपालकों के लिए लाभदायक होगा। इसकी मांग भी इन दिनों पशुपालकों की ओर से की जा रही है।

डॉ. एस.एम. के. नकवी, निदेशक, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर, मालपुरा